Course-502- Pedagogic Processes in Elementary Schools

पाठ्यक्रम-502 प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया

Max. Marks 30

कुल अंक 30

Assignment-I/ सत्रीय कार्य-1

Note : Answer any two of the following questions in about 500 words.

टिप्पणी : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :

1. Explain with suitable examples of four processes of observational learning. How does imitation help in observational learning. (5)

अवलोकनात्मक अधिगम की चारों प्रक्रियाओं की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। अवलोकनीय अधिगम में अनुकरण किस प्रकार सहायक है?

OR / अथवा

Compare the subject-centred approach and competency-based approach. Write any two advantages and limitations of these approaches. (5)

विशय–आधारित उपागम की तुलना दक्षता–आधारित उपागम से कीजिए। इन उपागमों की दो–दो लाभ एवं दो–दो सीमाए लिखिए।

2. Write the characteristics of Project method. What are its advantages and limitations? (5)

प्रोजेक्ट विधि की विशेषताएं लिखिए। इस विधि के लाभ एवं सीमाएं क्या हैं?

OR / अथवा

What are the main qualities of an activity? Why memorisation is not considered as an activity? (5)

किसी गतिविधि की मुख्य विशेषताएं क्या हैं? याद करना एक गतिविधि क्यों नहीं है?

FIND YOUR BOOKS .in

Assignment-II/सत्रीय कार्य-2

Note: Answer the following questions in about 500 words.

टिप्पणी: **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें।**

1. How do you plan to organise your classroom space to make it learner friendly? (5)

   अपने कक्षाकक्ष को अधिगम अनुकूल बनाने हेतु आप क्या योजना तैयार करेंगे?

   OR / अथवा

   Describe the different approaches of categorising TLM with examples. (5)

   शिक्षण अधिगम सामग्री को वर्गीकृत करने हेतु विविध तरीकों का उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

2. Prepare a unit test for any subject. Use oral, written and performance type of item in it. (5)

   मौखिक, लिखित एवं निश्पादन जैसे परीक्षण पदों का उपयोग करते हुए किसी एक विषय पर इकाई परीक्षण का निर्माण कीजिए।

   OR / अथवा

   What are the advantages and limitations of computer assisted learning in the classroom? (5)

   कक्षा में कम्प्यूटर सहायक अधिगम के लाभ तथा सीमाएं क्या हैं ?

FIND YOUR BOOKS .in

Assignment-III/ सत्रीय कार्य–3

Note: Answer the following question in about 1000 words.

टिप्पणी: **निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें।**

1. Suppose you are teaching in a tribal dominated school. You do not know the mother tongue of those children. How can you organise activities that children will learn? (10)

   मान लीजिए कि ऐसे विद्यालय में कार्यरत है जिसमें ज्यादातर बच्चे किसी विशिष्ट जनजाति से संबंधित हैं। आप उनकी मातृ भाषा नहीं जानते हैं। आप ऐसे बच्चों को सिखाने हेतु किस प्रकार की गतिविधिया तैयार करेंगे?

   OR / अथवा

   Consider that there are few CWSN children in your classroom, as a teacher how can you take care of such children in the classroom for facilitating their learning? (10)

   मान लीजिए कि आपकी कक्षा में कुछ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे हैं। ऐसे बच्चों को सिखाने के मददगार के रूप में किस प्रकार सहायता करेंगे?

FIND YOUR BOOKS .in

हिंदी (502)
प्रारंभिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया

Assignment-I/सत्रीय कार्य-1

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

Answer any two of the following questions in about 500 words.

प्रश्न 1. अवलोकनात्मक अधिगम की चारों प्रक्रियाओं की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। अवलोकनीय अधिगम में अनुकरण किस प्रकार सहायक है?

Explain with suitable examples of four processes of observational learning. How does imitation help in observational learning.

उत्तर– अवलोकन मानव अधिगम की सामान्य और प्राकृतिक विधि है। इसके द्वारा हम विभिन्न वस्तुओं का ब्यौरा प्राप्त करते हैं, जैसे वस्तुओं का आकार, परिणाम, शक्ल, रंग, इत्यादि। इस प्रकार का अधिगम है जो दूसरो के द्वारा किए गए व्यवहार के देखने, अपनाने व परखने से ग्रहण किया जाता है। अवलोकनात्मक अधिगम बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण अधिगम विधि है, जब बच्चा मौलिक क्रियाकलाप, जैसे–भाषा और सांस्कृतिक सिद्धांतों को ग्रहण करता है। अवलोकन किए गए व्यवहार के आधार पर नए व्यवहार का विकास है। Bandura (1977) के अनुसार, अवलोकन व्यवहार से निम्न चार विशेष प्रक्रियाएँ जुड़ी हुई हैं–

(1) ध्यान प्रक्रिया (Attention Process)–बच्चे आदर्श के पूरे व्यवहार की नकल नहीं करते, बल्कि केवल व्यवहार के विशेष पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो सीखने में उन्हें अच्छा लगता है। बच्चे व्यवहार के उन्हीं महत्वपूर्ण लक्षणें की ओर ध्यान देते हैं, जो वह सीखना चाहते हैं। उदाहरणतया–एक बच्चा अच्छा सुलेख लिखना सीखने के लिए अध्यापक को ध्यानपूर्वक देखता है और बारीकी से उसके पेंसिल पकड़ने के तरीके पर ध्यान केंद्रित करता है, वह कैसे अपनी अंगुलियाँ घुमाती है, कहाँ पर वह बड़े अक्षरों का उपयोग करती है।

(2) स्मृति की प्रक्रिया (Retention Process)–स्मृति को कई प्रकार के कारक प्रभावित कर सकते हैं। एकत्रित सूचनाओं को बाद में प्रयोग में लाना और उस पर अमल करना अवलोकन अधिगम का महत्वपूर्ण अंग है। अवलोकन की गई वस्तुओं को कुछ चिह्नों के उपयोग के तरीके के द्वारा, समझ के द्वारा और उनका संगठन करके याद रखने की आवश्यकता है। सूचना को दिमाग में एकत्रित करने की योग्यता भी अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है। Bandura (1977) सुझावित करते हैं–एक आदर्श से सीखने का सबसे अच्छा तरीका है अवलोकन किए गए व्यवहार को संज्ञानात्मक रूप से संबंधित और अभ्यास करना है और इसके बाद उस पर कार्य करना।

(3) पुनः निर्माण की गतिक प्रक्रिया (Motor Reproduction Process)– दृश्याकृति के अभ्यास के माध्यम से अवलोकित व्यवहार के स्मरण के बाद व्यवहार शारीरिक कार्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसके लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है। पहली, उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य के लिए मूलभूत चीजों की आवश्यकता होती है। यदि कोई सचिन तेंदूलकर के समान बल्लेबाज बनने की इच्छा रखता है, तब एक बल्लेबाज बनने के लिए उसमें शारीरिक योग्यता/क्षमता का होना मूलभूत आवश्यकता है। यदि कोई शारीरिक रूप से कमजोर है, तो ये संभव नहीं है कि वह सचिन तेंदूलकर के समान

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

बल्लेबाजी का अभ्यास कर सके, क्योंकि उसके लिए बल्ले को उठाना और तेंदूलकर की तरह घुमाना बहुत कठिन कार्य होगा।

अवलोकन किए गए व्यवहार को क्रियान्वित करने का दूसरा पहलू उस कार्य की श्रृंखला का वास्तव में अभ्यास करना है। दृश्याकृति की कल्पना और दिमागी रूप से अभ्यास करना भी अवलोकनकर्ता को उस कार्य के प्रदर्शन को स्वाभाविक बनाने में सहयोगी नहीं होगा। प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए लगातार अभ्यास और अभ्यास पर लगातार ही पृष्ठपोषण और प्रत्येक अभ्यास के बाद गलतियों में सुधार करना आवश्यक होता है।

(4) प्रेरक प्रक्रिया (Motivational Process)–कई बच्चे ऐसे होते है, जो दूसरे बच्चों को देखकर बहुत अच्छी तरह सीख लेते हैं और सीखने के सभी पदों को बता भी देते हैं तथा इस कार्य को अच्छी प्रकार कर भी लेते हैं। लेकिन जब आवश्यकता होती है या किसी और समय उनसे उस कार्य को करने के लिए कहें तो वे नहीं कर पाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में बच्चे को प्रेरित करने की आवश्यकता होती है विशेष रूप से किसी कार्य को करने के लिए स्व:प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

अवलोकनीय अधिगम में अनुकरण का महत्त्व–साधारणत:, अनुकरण किसी अन्य व्यक्ति के व्यवहार के अवलोकन या क्रियाओं की पूर्ण नकल है। अवलोकनीय अधिगम में अनुकरणीय व्यवहार में निम्न तीन रूप से सहायक हैं–(1) आदर्शीय प्रभाव (2) दमनात्मक/अदमनात्मक प्रभाव और (3) प्रकटीकरण का प्रभाव।

(1) किसी आदर्श के अवलोकन के परिणामस्वरूप ग्रहण हुए नये व्यवहार आदर्शीय व्यवहार में शामिल होते हैं।

(2) आमतौर पर समान व्यवहार में व्यस्त किसी आदर्श को दंडित होता हुआ देखने के परिणामस्वरूप आदर्श के पथ भ्रष्ट व्यवहार के प्रतिबंध से संबंधित है।

अदमनात्मक प्रभाव इसके विपरीत है। यह तब घटित होता है जब बच्चा किसी आदर्श को पहले से सीखे हुए पथभ्रष्ट व्यवहार करने के कारण ईनाम पाते हुए अवलोकन करता है।

(3) प्रकटीकरण प्रभाव किसी आदर्श के प्रतिक्रियात्मक कार्य से संबंधित है न कि उसकी व्यवहारिक विशेषताओं से। प्रकटीकरण प्रभाव का एक उदाहरण समूह का व्यवहार है। किसी खेल की घटना में, भीड़ में एक व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर ताली बजा रहा है। कभी-कभी भीड़ में बहुत से व्यक्ति यह नहीं जानते कि वे इस तरह का व्यवहार क्यों प्रकट कर रहे हैं।

कक्षा में, एक शिक्षक छोटे बच्चों में सकारात्मक और सामाजिक एच्छिक व्यवहार को विकसित करने के योग्य बनाने के लिए, प्रकटीकरण का उपयोग कुछ इस प्रकार कर सकता है–

(1) शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों के द्वारा प्रकटीकरण के लिए आदर्श बनने की कोशिश करें। अपने व्यवहार के सकारात्मक पहलू का प्रदर्शन अपने विद्यार्थियों के सामने करें। एक शिक्षक का सकारात्मक अभ्यास जैसे–स्वच्छता, समय बद्धता, सच्चाई और सुन्दरता आदि सभी बच्चे को प्रकटीकरण सिखाने के लिए प्रभावकारी हैं। कभी भी अपनी किसी भी कमजोरी का प्रदर्शन बच्चों के सामने नहीं करना चाहिए।

(2) कक्षा में बच्चों को इतिहास, सामाजिक विज्ञान, साहित्य और कहानी आदि का अध्ययन कराने के दौरान शिक्षक को हमेशा महत्त्वपूर्ण चरित्रों के सकारात्मक पहलू को बच्चों के द्वारा प्रकटीकरण के लिए चिह्नांकित करना चाहिए।

(3) जब कोई बच्चा कक्षा में सकारात्मक व्यवहार प्रकट करता है, तब शिक्षक को

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

चाहिए कि वह उस बच्चे की प्रशंसा करे और उसे दोबारा ऐसा करने के लिए उत्साहित करे। ऐसा करने से कक्षा में बाकी बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। डी.एल.एड. से संबंधित सहायक सामग्री के लिए विजिट करें गुल्लीबाबा डॉट कॉम।

अथवा

विषय-आधारित उपागम की तुलना दक्षता-आधारित उपागम से कीजिए। इन उपागमों के दो-दो लाभ एवं दो-दो सीमाएँ लिखिए।

Compare the subject-centred approach and competency-based approach. Write any two advantages and limitations of these approaches.

उत्तर– विषय-केंद्रित उपागम और दक्षता-केंद्रित उपागम का तुलनात्मक वर्णन निम्न है–

विषय-केंन्द्रित उपागम–विषय केंद्रित उपागम शैक्षिक अनुभवों के संगठन के लिए अधिकतम प्रयुक्त होने वाले उपागमों में से एक है। इस उपागम में विषय वस्तु के चारों ओर अधिगम अनुभवों का संगठन किया जाता है और शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विषय वस्तु में प्रवीणता ही मूल आधार है। उदाहरण के लिए, विषय में शामिल प्रकरण अवधारणा को महत्त्व दिया जाता है, जिसके चारों ओर सभी शिक्षण एवं अधिगम क्रियाकलाप परिक्रमण करते हैं। शिक्षण एवं अधिगम के लिए पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यक्रम का दृढ़ता से अनुकरण करना अधिकांश विद्यालयों में एक सामान्य अभ्यास है। सभी विषयों में पाठ्यपुस्तक को सभी आवश्यक अवधारणा, उदाहरण एवं अभ्यास के भंडार गृह के रूप में माना जाता है जिसकी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए आवश्यकता होती है।

विषय-केंन्द्रित उपागम की विशेषताएँ–

(1) विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं को पाठ्यपुस्तक के द्वारा ही पूरा हुआ माना जाता है।

(2) विषय वस्तु पर ही ध्यान केंद्रित होता है अत: कक्षा में पाठ्यपुस्तक का आदान-प्रदान ही सभी कक्षा क्रियाकलापों का मूल होता है।

(3) कक्षा की सभी परस्पर क्रियाएँ पाठ्य पुस्तक केंद्रित होती है।

(4) शिक्षक स्वयं को बच्चों के सम्मुख एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है जैसे कि वह विषय से संबंधित सभी मामलों का आधिपत्य रखता है।

(5) कक्षा में विषयवस्तु को प्रस्तुत करते समय वास्तविक जीवन की स्थितियों को मुश्किल से ही स्थान दिया जाता है।

(6) मूल्यांकन के लिए पाठ्यपुस्तक आधारित प्रश्न उपयोग किए जाते हैं जिनमें विभिन्नता की कमी होती है।

(7) गुणात्मक आधारित परिणाम की अपेक्षा संख्यात्मक आधारित परिणाम का दबाव होता है।

दक्षता-केंद्रित उपागम–कक्षा में कोई भी पाठ पढ़ाते समय शिक्षक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि विद्यार्थियों ने पाठ की अवधारणाओं को समझकर अपेक्षित ज्ञान, समझ और कौशल अर्जित किया है अथवा नहीं। यदि अपेक्षित अधिगम परिणाम को मूर्त-रूप से प्राप्त कर लिया गया है, तो न केवल विद्यार्थियों को किस तरह से पढ़ाया जाए या सुविधा उपलब्ध कराई जाए ताकि लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके- के लिए योजना बनाई जा सकती है, बल्कि उपरोक्त प्रश्न का मूल्यांकन व उत्तर भी प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार के परिणाम आधारित उपागम को प्राय: योग्यता आधारित उपागम कहा जाता है।

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

योग्यता–

(1) एक कौशल है जिसकी आवश्यकता एक सफल विद्यार्थी को पड़ती है।

(2) एक आवश्यक कौशल, ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार है जिसकी वास्तविक जगत के कार्यों या गतिविधियों के संपादन के लिए आवश्यकता पड़ती है।

(3) एक व्यक्ति द्वारा पूर्ण किया गया क्रियाकलाप है जिसको स्पष्ट रूप से परिभाषित किया व मापा जा सकता है (संबंधित ज्ञान और कौशलों का संग्रह)।

विषय-केंद्रित उपागम के लाभ–विद्यार्थियों को बार-बार पढ़कर तथ्यों को स्मरण करने पर बल दिया जाता है। वे अपने उत्तर मौखिक रूप से या लिखित रूप से वास्तविक पाठ्यवस्तु के पुनरुत्पादन के द्वारा निर्मित कर सकते हैं।

विषय-केंद्रित उपागम की सीमाएँ–कक्षा में विषय-वस्तु को प्रस्तुत करते समय वास्तविक जीवन की स्थितियों को मुश्किल से ही स्थान दिया जाता है। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की नकल से मौखिक व लिखित रूप से उत्तर देते हैं।

दक्षता-केंद्रित उपागम के लाभ

(1) विद्यार्थी ने आज जो कुछ सीखा है उसे वह कल भूल नहीं सकता है क्योंकि विद्यार्थी अध्यापक के दिशा निर्देशन में योग्यता के मास्टरी स्तर को प्राप्त करता है।

(2) योग्यता आधारित उपागम विद्यार्थी को रटकर याद करने की पद्धति से दूर रखता है।

सीमाएँ–

(1) अध्यापक को विषयवस्तु के बारे में गहन ज्ञान रखने की अति आवश्यकता होती है क्योंकि विद्यार्थी अध्यापक से दक्षता हासिल करता है। यदि अध्यापक विषयवस्तु में कुशल नहीं है तो उस स्थिति में यह उपागम कार्य नहीं कर सकता है।

(2) सभी विद्यालयों का अधिगम वातावरण श्रेष्ठ तरीके से ज्ञानार्जन करने के लिए बराबर नहीं होता है और इस प्रकार निर्धारित समय में योग्यताओं की प्राप्ति प्रभावकारी नहीं होती है।

प्रश्न 2. प्रोजेक्ट विधि की विशेषताएँ लिखिए। इस विधि के लाभ एवं सीमाएँ क्या हैं?

Write the characteristics of Project method. What are its advantages and limitations?

उत्तर– प्रोजेक्ट विधि की निम्नांकित विशेषताएँ हैं–

(1) उद्देश्य–किसी भी कार्य को आरंभ करने से पहले उस कार्य का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। उद्देश्यपूर्ण क्रिया ही व्यक्ति की समूची शक्तियों की उस क्रिया को संपन्न करने की ओर अग्रसर करती है। प्रोजेक्ट विधि में योजना का उद्देश्य स्पष्ट होता है। विद्यार्थियों को मालूम होता है कि वे अमुक कार्य क्यों कर रहे हैं? इसलिए वे पूरी लगन के साथ काम करते हैं।

(2) वास्तविकता–योजना विधि जीवन की वास्तविकता को महत्त्वपूर्ण स्थान देती है। यदि शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों को जीवन के लिए तैयार करना है तो स्कूल में वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को उत्पन्न करना अत्यंत आवश्यक है। योजना विधि इसी प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न करके विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करती हैं। इस प्रकार यह विधि इन सिद्धांतों के आधार पर मनोवैज्ञानिक विधि कहलाती है इसमें रुचियों के अनुसार सीखना, काम द्वारा सीखना, व्यक्तिगत अनुभूतियों द्वारा सीखना आदि शामिल हैं।

(3) समग्रता–मनुष्य सदैव क्रियाशील रहता है वह क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त करता है

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

और अनुभव अन्य क्रियाओं को करने की प्रेरणा प्रदान करता है। क्रिया से प्राप्त अनुभव बच्चे को शिक्षा प्रदान करता है। चूँकि प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन के समस्याओं पर आधारित होता है प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए वास्तविक अनुभव चाहिए और कोई भी वास्तविक अनुभव केवल एक ही विषय के ज्ञान को शामिल नहीं करता है, वरन् एक से अधिक विषयों के ज्ञान को जोड़कर किसी प्रोजेक्ट को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है। कक्षा में विभिन्न विषयों के संदर्भ में प्राप्त ज्ञान को मिलाकर उपयोग करना ही प्रोजेक्ट कार्य की बुनियादी आवश्यकता है।

(4) उपयोगिता–ज्ञान उपयोगी और व्यावहारिक होना चाहिए तभी उसका महत्त्व होता है। पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान तब तक व्यावहारिक नहीं बन सकता जब तक उसे प्रयोग न किया जाए। परंतु क्रिया और अपने अनुभवों से प्राप्त ज्ञान की व्यावहारिकता एवं उपयोगिता ज्ञान प्राप्ति के समय ही सिद्ध हो जाती है। योजना विधि में विद्यार्थी क्रिया और अपने अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए उनका ज्ञान उन विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी होता है जिन का ज्ञान केवल पुस्तकों पर आधारित होता है।

(5) स्वतंत्रता–स्वतंत्र वातावरण में व्यक्ति अधिक काम करता है जिससे उसकी मानसिक एवं बौद्धिक प्रवृत्तियों का विकास होता है जिसे वह अभिव्यक्त कर सकते है। स्वतंत्र अभिव्यक्ति उनके व्यक्तित्व के समुचित विकास में सहायक सिद्ध होती है।

(6) क्रियाकलाप–क्रिया करना बालक के स्वभाव में होता है और उसके इस स्वभाव का तकाजा है कि उसे काम करने के अवसर प्रदान किए जाए। यह विधि विद्यार्थी को सदैव क्रियाशील बनाए रखती है। इस विधि में उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने के कई अवसर मिलते हैं।

(7) समस्यात्मक–प्रत्येक प्रोजेक्ट का उद्देश्य किसी विद्यार्थी-विद्यार्थियों द्वारा अनुभूत एक समस्या का समाधान करना है। समस्या के बारे में जागरूक होना प्रोजेक्ट निर्माण को प्रारंभ करता है।

(8) प्रजातांत्रिक मूल्य–विद्यार्थी जब समूह में प्रोजेक्ट कार्य कर रहे होते हैं, तब वे एक-दूसरे की मदद करते हैं, आदर विचारों को आपस में बाँटते हैं तथा जिम्मेदारी उठाते हैं। इस प्रकार की विशेषताओं का पोषण करने से विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास होता है। किलपैट्रिक (Kilpatrick) के अनुसार, यह एक प्रजातंत्र में सबसे उत्तम विधि है।

प्रोजेक्ट पद्धति के लाभ–इसके निम्न लाभ हैं–

(1) यह मनोवैज्ञानिक विधि हैं–यह विधि शिक्षा मनोविज्ञान के नियमों पर आधारित है। शिक्षा मनोविज्ञान इस बात पर बल देता है कि सिखाने से पहले विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए, उनकी शिक्षा क्रियात्मक ढंग से होनी चाहिए। योजना विधि में ये सभी बात ठीक बैठती है। इसमें छात्र स्थिति का अनुभव करके योजना तैयार करता है तथा फिर वह इस तरह सीखने को प्रेरित होता हैं।

(2) समय और शक्ति की बचत–इसमें बालक अपनी रुचि के अनुसार कार्य करता है जिससे कार्य बड़ी तेजी से होता है। थोड़े समय में और थोड़ी शक्ति के व्यय से ही अच्छा प्रतिफल मिलता है।

(3) विद्यार्थियों को स्वतंत्रता–इस विधि में अध्यापक छात्रों को प्रदत्त स्थिति से लेकर प्रोजेक्ट को चुनने, योजना बनाने क्रियान्वित करने, मूल्यांकन करने तथा आलेखन में उनका मार्गदर्शन करता है तथा इसमें कार्य छात्र अपनी रुचियों के अनुसार करते हैं। इसमें उनको कार्य करने की स्वतंत्रता होती है। अपने आप सीखने के कारण उनके व्यक्तित्व का

FIND YOUR BOOKS

विकास होता है।

(4) श्रम की महानता–इस विधि में बच्चे सारा कार्य अपने हाथों से करते हैं। इस कार्य में हस्तकलाएँ भी सम्मिलित है। इससे वे श्रम की महानता को जानते हैं।

(5) पुस्तकीय शिक्षण के दोषों से मुक्त हैं–पुस्तकीय विधि पाठ्य-पुस्तक पर केंद्रित होती है जिन्हें वे अपनी रुचियों के अनुरूप प्राप्त नहीं कर पाते। पुस्तकीय विधि नीरस, शुष्क तथा निष्क्रिय विधि है। जबकि योजना विधि रोचक व मनोरंजक क्रियाओं से युक्त होती है। इस प्रकार योजना विधि पुस्तकालय विधि के दोषों से मुक्त होती हैं।

(6) सामाजिक समायोजन का प्रशिक्षण–प्रोजेक्ट विधि में छात्र को कार्य करते समय विभिन्न प्रकार की स्थितियों से गुजरना पड़ता है। इसमें कार्य करते समय दूसरों के भी सहयोग की जरूरत पड़ती है। जिससे उसका सामाजिक समायोजन अपने आप होता है जो कि सामाजिक अध्ययन शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होता है।

(7) जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षा–इस विधि का संबंध बालकों की प्रतिदिन की आवश्यकताओं तथा अनुभवों से होता है। इसमें केवल वही अंश पढ़ाए जाते हैं जो वास्तविक जीवन से संबंधित होते हैं। यह ज्ञान क्रियात्मक, उपयोगी तथा उचित स्वभावों का निर्माण तथा अभिरुचियों का निर्माता होता है।

प्रोजेक्ट विधि की सीमाएँ–इसकी निम्न सीमाएँ हैं–

(1) पाठ्यक्रम के सभी क्षेत्रों में इसका इस्तेमाल सदैव संभव नहीं होता है।

(2) एक औसत अध्यापक के लिए एक प्रोजेक्ट की योजना बनाना कठिन कार्य है और इसमें सभी विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करना कठिन कार्य है।

(3) प्रोजेक्ट विधि द्वारा अर्जित अनुभव/ज्ञान का समन्वयीकरण का अभाव होता है।

अथवा

किसी गतिविधि की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? याद करना एक गतिविधि क्यों नहीं है?

What are the main qualities of an activity? Why memorisation is not considered as an activity?

उत्तर– एक प्रभावकारी अधिगम क्रियाकलाप की चार मुख्य विशेषताएँ हैं, जो कि निम्न हैं–

(1) ध्यान केंद्रित–अधिगम संबंधी क्रियाकलापों की रचना लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए की जाती है। वे इस प्रकार डिजाइन किये जाते हैं कि प्रतिभागी विद्यार्थी अपना पूरा ध्यान समस्या का समाधान करने में या लक्ष्य प्राप्ति में केंद्रित रखें और उनका ध्यान भंग न हो।

(2) चुनौतीपूर्ण–प्रभावी क्रियाकलाप विद्यार्थियों के सामने एक चुनौती प्रस्तुत करता है। यह न तो बहुत आसान और न ही बहुत कठिन होने के कारण इसे न तो उपेक्षित किया जा सकता है और न ही इसे हल करने का प्रयास किए बिना छोड़ा जा सकता है। यह औसत रूप से कठिन होता है जो कि विद्यार्थियों की क्षमताओं के भीतर होता है परंतु एकाग्रचित्त होकर तथा थोड़ा अधिक प्रयास करके समस्या को हल किया जा सकता है।

(3) स्वतः अंतर्भागिता–एक अच्छे क्रियाकलाप की यह विशेषता होती है कि इसके शुरू होते ही विद्यार्थी इसकी ओर तुरंत आकर्षित होते हैं और वे इस क्रियाकलाप में बिना किसी दबाव के या किसी अनुनय विनय के अपनी इच्छा से भाग लेते हैं।

(4) आनंददायक–क्रियाकलाप के पूर्ण होने पर जब विद्यार्थी संतुष्ट हो जाता है, तो

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

कहा जा सकता है कि क्रियाकलाप प्रभावी है। एक अच्छे क्रियाकलाप की यह प्रकृति होती है कि इसका आयोजन विद्यार्थी के लिए रुचिकर होता है और यह उपलब्धि का भाव लाता है, आनंद उपलब्ध कराता है जो कि अंतत: विद्यार्थी को अगले चुनौतीपूर्ण क्रियाकलाप में भाग लेने के लिए अंत:प्रेरणा जागृत करता है।

ये सभी विशेषताएँ एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं, अपितु परस्पर अंत:आश्रित हैं। याद करना (कंठस्थीकरण) दोहराने का यांत्रिक तरीका है, जिसमें किसी क्रियाकलाप की चारों विशेषताओं में से एक भी शामिल नहीं है। अत: याद करना एक गतिविधि नहीं है।

सत्रीय कार्य-2/Assignment-II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें।

Answer the following questions in about 500 words.

प्रश्न 1. अपने कक्षाकक्ष की जगह को अधिगम अनुकूल बनाने हेतु आप क्या योजना तैयार करेंगे?

How do you plan to organise your classroom space to make it learner friendly?

उत्तर– कक्षा में विद्यार्थियों के अधिगम के लिए उपलब्ध स्थान की गुणवत्ता जानना भी एक शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण है। एक सुसंगठित व सुसज्जित कक्षा वातावरण में न केवल सभी वस्तुएँ विधिवत् व पहुँच के अंदर होती हैं, अपितु विविध अधिगम परिस्थितियों को करने में भी सुगमता प्रदान करती हैं। यदि कक्षा के स्थान का प्रबंध समुचित ढंग से होता है तो इससे यह संदेश मिलता है कि अध्यापक अपने विद्यार्थियों की परवाह करता है। कक्षा के वातावरण को अधिगम के लिए सकारात्मक बनाना और बच्चों के कक्षा में प्रवेश करने से पहले एक अध्यापक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सभी आवश्यक सामान कक्षा में अपनी जगह पर रखा है। यहाँ तक कि एक छोटे विद्यालय में जहाँ पर संसाधन भी सीमित है, एक अच्छा अध्यापक अधिगम को बढ़ाने के लिए कक्षा को सुव्यवस्थित बना सकता है। इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए अपने कक्षा-कक्ष को अधिगम अनुकूल बनाने हेतु हम निम्न योजना तैयार करेंगे–

(1) कक्षा का फर्नीचर और फर्श का स्थान–अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में, बच्चे फर्श पर बैठते हैं और कहीं-कहीं डेस्कों पर बैठते हैं। उपलब्ध स्थान एवं क्रियाकलाप की प्रकृति के आधार पर हम विभिन्न प्रकार की बैठने की व्यवस्था, जैसे–रैखिक पंक्ति, अर्ध वृत्ताकार, आमने-सामने आदि का उपयोग करेंगे। कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था और बैठने की व्यवस्था इस प्रकार करेंगे कि बच्चे कमरे में आसानी से गति कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर हम प्रत्येक बच्चे के पास आसानी से जा सकें एवं जब बच्चे क्रियाकलाप कर रहे होते हैं तब व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बच्चे पर हमारा ध्यान केंद्रित हो सके तथा हम उनका आसानी से अवलोकन कर सकें। कमरे में शेल्फ, अलमारी और अन्य फर्नीचर, जहाँ पर विभिन्न प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री रखी जाती है, को एक विशेष स्थान पर रखेंगे।

(2) कक्षा की दीवारें–कक्षा में दीवार के स्थान तथा बुलेटिन बोर्ड के विषय में ध्यान रखेंगे–

(क) कक्षा के ग्रेड के अनुसार दीवार पर क्रियाकलाप बनाएँगे, जा सकता है, ताकि विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से इन क्रियाकलापों को सीख सकें।

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

(ख) कुछ स्थान दीवार पर खाली छोड़ेंगे ताकि इस पर विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार कुछ लिख सकें।

(ग) दीवार स्थान या बुलेटिन बोर्ड के स्थान में से कुछ स्थान ऐसा भी रखेंगे जहाँ पर हम तथा विद्यार्थी कोई वस्तु या सामग्री अपनी व्यक्तिगत रुचि के आधार पर रख सकें।

(घ) अच्छे विद्यार्थियों के क्रियाकलापों के कुछ उदाहरणों के लिए स्थान निर्धारित करेंगे।

(ङ) विद्यार्थियों के दत्त कार्य के चार्ट, परियोजना का उपयोग करने हेतु किसी बड़े केंद्रित स्थान का प्रयोग करेंगे ताकि सभी विद्यार्थी देख सकें।

इसके अतिरिक्त कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ जैसे फर्नीचर की व्यवस्था, दीवार का स्थान तथा बुलेटिन बोर्ड आदि कक्षा के वातावरण को और अधिक अच्छा बनाती हैं। कक्षा की दीवारें अनेक प्रकार की सूचियों से भरी हो सकती हैं, जैसे–उपस्थिति के लिए हस्ताक्षर बोर्ड, रंगीन चार्ट, शब्दों की सूची, गीत, पहेलियाँ, दैनंदिनी, और विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप आदि। एक संदेश बोर्ड भी कक्षा के किसी बड़े स्थान पर लगाया जा सकता है, जिस पर हम एवं विद्यार्थी एक-दूसरे के लिए संदेश लिख सकते हैं। एक विशेष किताबों की शेल्फ की व्यवस्था करेंगे, जिसमें निम्न प्रकार की पुस्तकें रखी जा सकती हैं, जैसे–कहानियों की किताब, बड़ी किताबें, कॉमिक की किताबें, संदर्भित किताबें, आदि। दीवारों को विभिन्न क्रियाकलापों से पेंट करवाएँगे जो उस कक्षा की अवधारणा और दक्षताओं से संबंधित है। दीवार की इन क्रियाकलापों के द्वारा विद्यार्थी अपने समूह में चर्चा करेंगे और एक दूसरे से सीखेंगे।

(3) कक्षा में शिक्षण सामग्री का प्रबंधन–शिक्षण सामग्रियों को सावधानीपूर्वक उचित स्थान पर रखने की योजना बनाना भी शिक्षार्थी के अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सहायक हो सकता है। निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा-कक्ष में शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित रूप से रखेंगे–

(क) उपयुक्त सामग्रियों का संग्रह करेंगे (जैसे पुस्तक, पेपर, पेंसिल, रबर, कलर पेंसिल प्रयोगशाला उपकरण) तथा ऐसे स्थान पर रखेंगे जहाँ से विद्यार्थी आसानी से उसे प्राप्त कर सकें।

(ख) जिन सामग्रियों का इस्तेमाल केवल हमें करना है, उसे विद्यार्थियों की पहुँच से बाहर रखेंगे।

(ग) सामग्रियों को टेबल या अलमारी में फैलाकर रखने की बजाय बॉक्स के भीतर व्यवस्थित रूप से रखेंगे।

(घ) कमरे में एक स्थान सुनिश्चित कर उस जगह लेबल लगाएँगे जहाँ पर विद्यार्थी अपनी अभ्यास-पुस्तिका को कार्य पूरा करने के पश्चात् रखेंगे। प्राथमिक कक्षाओं में विभिन्न बॉक्स और ट्रे का उपयोग अलग-अलग विषयों से संबंधित सामग्री के लिए करेंगे, जो विद्यार्थी अभी सिर्फ पढ़ना सीख रहे हैं (जैसे कक्षा प्रथम के विद्यार्थी) उनके लिए रंगीन संकेतक या आइकन का उपयोग बॉक्स या ट्रे के ऊपर करेंगे ताकि विद्यार्थी आसानी से उनकी पहचान कर सकें एवं इनके लिए भी उचित स्थान का चयन करेंगे।

अथवा

शिक्षण अधिगम सामग्री को वर्गीकृत करने हेतु विविध तरीकों का उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

Describe the different approaches of categorising TLM with

FIND YOUR BOOKS .in

examples.

उत्तर– शिक्षण अधिगम सामग्री को वर्गीकृत करने हेतु विविध तरीके निम्नलिखित हैं–

(1) वास्तविक वस्तु/अनुभव–कक्षा-कक्ष में वास्तविक वस्तुओं को शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। अपने चारों ओर की वास्तविक वस्तु, व्यक्ति और घटनाओं के प्रत्यक्ष उपयोग के द्वारा विद्यार्थी स्वयं कार्य करने के बाद प्राप्त किया गया अनुभव प्राप्त करते हैं। जब अध्यापक शिक्षण कर रहे होते हैं, तब ये कोशिश करनी होगी कि वे बच्चों को वास्तविक वस्तुएँ दिखायें, जिससे कि वे सीखने के लिए अपेक्षित अवधारणा से संबंधित वस्तु का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकें। परंतु यह हमेशा संभव नहीं है कि वास्तविक वस्तु को कक्षा में लेकर आया जाए। इसके कुछ कारण निम्नलिखित हैं–

(क) वस्तु का आकार की माप–आकार में बहुत बड़ी वस्तु को कक्षा में ले जाने में तथा भण्डारण में परेशानी होती है और बहुत छोटी वस्तु को कक्षा में दिखाने में पेरशानी हो सकती है।

(ख) सुरक्षा–सांप, बिच्छु, आदि की प्रजाति को कक्षा में लाना बच्चों की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकता है।

(ग) कीमत–कुछ वस्तुएँ कक्षा उपयोग के लिए बहुत महंगी होती हैं।

बच्चों को प्रभावशाली समझ के लिए छोटी कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन एवं बड़ी कक्षाओं में विज्ञान के शिक्षण में अनेकों अनुभव दिए जाते हैं। बच्चे अपने तात्कालिक वातावरण में उपस्थित विभिन्न वस्तुओं एवं स्थानों से प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं जैसे–वास्तविक फूल, पत्ती, पौधे, कीड़े-मकोड़े आदि का अवलोकन करके, जंगल में भ्रमण के दौरान उपयोगी जंगली उत्पादों का एकत्रीकरण करके, विभिन्न प्रकार के संगठनों में जाकर जैसे–पंचायत कार्यालय, बैंक, डाकघर आदि एवं उनकी कार्यशैली का अवलोकन करके, एक्वेरियम की स्थापना एवं रखरखाव करके। प्रत्यक्षक एवं स्थूल अनुभव बच्चों की कठिन अवधारणाओं को समझने में सहायता करते हैं। अत: जितने संभव हो उतने अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त करने का प्रयास बच्चों को करना चाहिए।

(2) तैयार शिक्षण अधिगम सामग्री–शिक्षक विशेष या प्रकरण के शिक्षण एवं अधिगम के लिए तैयार शिक्षण अधिगम सामग्री जैसे–मानचित्र, चार्ट, चित्र, मॉडल, खिलौने, कंकड़, रंगीन तीलियाँ, फ्लैश कार्ड, संख्याओं व अक्षरों के कार्ड आदि सामान्य प्रयोग में आने वाली शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करते हैं। अपनी कक्षा की आवश्यकता के लिए शिक्षक इन सामग्रियों को दो तरीकों से ग्रहण करते हैं–(i) बाजार से खरीद कर तथा (ii) स्वयं या कभी-कभी विद्यार्थियों की सहायता से विकसित करके।

मानक शिक्षण सहायक सामग्री जैसे–मानचित्र, ग्लोब, चार्ट, पैमाना, मापने के लिए फीता आदि अक्सर बाजार से खरीदे जाते हैं। सामग्रियों का मूल्य उनके गुणों के अनुसार तय होता है। इनमें से अधिकतर सामग्री मशीनों के द्वारा तैयार की जाती है, वे दिखने में आकर्षक होती है और तुलनात्मक रूप से अधिक लम्बे समय तक चलती है इसीलिए अधिकतर अध्यापक इन्हें खरीदना पसंद करते हैं।

शिक्षक बाजार से तैयार सामग्री जैसे–मानचित्र, चार्ट चित्र आदि ही नहीं खरीदते अपितु कुछ इस प्रकार की सामग्री जैसे–ड्राईंग शीट, स्केच पेन, रंगीन सामग्री, गोंद, कैंची, पैमाना आदि भी शिक्षण सहायक सामग्री स्वयं तैयार करने हेतु या विद्यार्थियों की मदद से तैयार करने

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

हेतु खरीदते हैं। परंतु शिक्षण सहायक सामग्री बाजार से खरीदे जाने के बावजूद भी शिक्षक इन्हें स्वयं या विद्यार्थियों की मदद से तैयार करते हैं।

ऐसा इसलिए है, क्योंकि शिक्षक सभी सामग्री को खरीदने का खर्च वहन नहीं कर सकते और कभी-कभी कुछ ऐसी जटिल सामग्रियों की कक्षा में आवश्यकता होती है जो बाजार से तैयार उपलब्ध नहीं हो पाती।

शिक्षण सहायक सामग्री को उसके श्रव्य एवं दृश्य प्रभाव के आधार पर भी तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(क) श्रव्य सहायक सामग्री–वे साधन, जिनको सुनाकर शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है श्रव्य साधन कहलात हैं। श्रव्य इंद्रियों द्वारा सुनी जाने वाली श्रव्य सामग्री जिसकी सहायता से व्यक्ति सुनकर अधिगम करता है। जैसे–रेडियो प्रसारण, कैसेट तथा सीडी प्लेयर, आदि इसमें समाहित हैं।

(ख) दृश्य सहायक सामग्री–वे साधन, जिनको दिखाने का प्रभाव अधिक पड़ता है, दृश्य सहायक सामग्री कहलाता है। अतः दृश्य इंद्रियों द्वारा देखी जाने वाली दृश्य सामग्री जिसकी सहायता से व्यक्ति देखकर अधिगम करता है। जैसे–ब्लैक बोर्ड, चार्ट, चित्र, ग्राफ, मॉडल, फिल्म पट्टियाँ, स्लाईड इसमें समाहित हैं।

(ग) दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री–ऐसी सामग्री जिसमें दृश्य एवं श्रव्य दोनों इंद्रियों की आवश्यकता होती है और सुनकर व देखकर, अधिगम में बच्चों को सहायता प्राप्त होती है, दृश्य-श्रव्य सामग्री कहलाती है। जैसे–टेलीविजन, फिल्म और कम्प्यूटर सहायक सूचनाएँ आदि। यह ऐसी सामग्री उपकरण अथवा युक्तियाँ हैं, जिनके प्रयोग से विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों में छात्रों और समूहों के मध्य प्रभावी ढंग से ज्ञान का संचार किया जाता है।

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण कुछ अन्य तरीकों पर भी आधारित है, जो इस प्रकार हैं–

(i) प्रक्षेपित सहायक सामग्री–चलचित्र, एपीडियास्कोप, मैजिक लैन्टर्न, माइक्रो प्रोजेक्टर्स, ओवर हेड प्रोजेक्टर, एलसीडी प्रोजेक्टर आदि।

(ii) अप्रक्षेपित सहायक सामग्री–चॉक बोर्ड, फेल्ट बोर्ड, बुलेटिन बोर्ड, फोटग्राफ, पोस्टर, मानचित्र, चार्ट, ग्लोब, नमूने, और व्याख्या सहित पाठ्य पुस्तकें आदि अप्रक्षेपित सहायक सामग्री के उदाहरण हैं।

(iii) अनुभवात्मक सहायक सामग्री–क्षेत्रीय भ्रमण, शैक्षिक दौरा, महत्वपूर्ण संस्थानों की यात्रा, अनुप्रयोगों का अवलोकन, प्रदर्शन और प्राकृतिक असाधारण दृश्य आदि अनुभवात्मक सहायक सामग्री के उदाहरण हैं।

प्रश्न 2. मौखिक, लिखित एवं निष्पादन जैसे परीक्षण पदों का उपयोग करते हुए किसी एक विषय पर इकाई परीक्षण का निर्माण कीजिए।

Prepare a unit test for any subject. Use oral, written and performance type of item in it.

उत्तर– कक्षा तीन के लिए हिंदी विषय की इकाई परीक्षा का नमूना निम्नलिखित है–

केंद्रीय विद्यालय

इकाई परीक्षा

कक्षाः तीन विभागः__ **पूर्णांकः 40**

विषयः हिंदी

नाम : __________ रोल नंबर : ________ दिनाँक : _________

निरीक्षक हस्ताक्षर : __________ परीक्षक हस्ताक्षरः __________

पठन (मौखिक)	लेखन	व्याकरण	सृजनात्मक लेखन	कुल

पठन (मौखिक)

प्रश्न 1. नीचे लिखे अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमारे देश में सबसे सुंदर मौसम बसंत ऋतु का है। इसे ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इस समय मौसम बहुत सुहावना होता है। न अधिक सर्दी होती है न अधिक गर्मी। इस समय वनों और बागों में रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं। टेसू, गुलाब, चमेली आदि फूलों की शोभा निराली होती है। आम के पेडों पर कोयल मधुर स्वर में कूकने लगती है। खेतों में सरसों के पीले-पीले फूल खिल उठते हैं।

I. किस मौसम को ऋतुओं का राजा कहा जाता है? (1)

II. इस मौसम में खिलने वाले फूलों के नाम क्या-क्या हैं? (1)

III. कोयल किस फल के पेड़ पर बैठकर कूकती है? (1)

IV. सरसों के फूल का रंग कैसा होता है? घेरा लगाओ– (1)

सफेद, पीला, लाल

V. उल्टे अर्थ वाले शब्द लिखो– (2)

गरमी– ----------- कर्कश– ----------

VI. बहुवचन लिखो– (2)

वन– ----------- बाग– -----------

VII. शब्दों में 'ँ' या 'ं' लगाएँ– (4)

रग, चाद, बसत, पाच

लेखन

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखो–

प्रश्न 2. दोनों बिल्लियों के झगड़े का निपटारा करने कौन आया? (2)

प्रश्न 3. पहलवान ने आफंती से क्या कहा? (2)

प्रश्न 4. गुरुजी बाजार किस लिए जा रहे थे? (2)

प्रश्न 5. क्या देख काबुलीवाले के मुँह में पानी आ गया? (2)

व्याकरण

प्रश्न 6. वचन बदलो– (4)

बिल्ली _____ लड़की _____

रोटी _____ गाय _____

प्रश्न 7. विलोम शब्द लिखिए– (4)

अच्छा _____ डरपोक _____

खुशबू _____ उदास _____

प्रश्न 8. लिंग बदलो– (4)

नाना _____ बूढ़ा _____

मोर _____ बच्चा _____

सृजनात्मक लेखन

प्रश्न 9. गाय या बंदर के विषय में पाँच वाक्य लिखिए– (5)

_____

प्रश्न 10. आखिर में दिए गए शब्द से नया शब्द बनाकर माला पूरी कीजिए। (3)

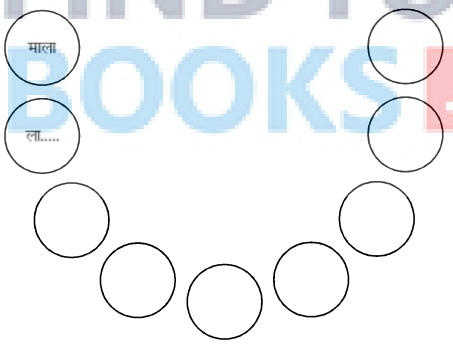

अथवा

कक्षा में कंप्यूटर सहायक अधिगम के लाभ तथा सीमाएँ क्या हैं?

What are the advantages and limitations of computer assisted learning in the classroom?

उत्तर– कंप्यूटर सहायक अधिगम के लाभ–कक्षा में कंप्यूटर सहायक अधिगम के निम्नलिखित लाभ हैं–

(1) कंम्प्यूटर की मदद से श्रव्य के साथ-साथ दृश्यात्मक अधिगम भी संभव है, जिसके कारण छात्रों को समझने में आसानी होती है।

(2) क्रियाकलाप संबंधी चार्ट, ग्राफ आदि को छात्र एक्सेल (excel) की मदद से तैयार कर सकते हैं। इससे वे देखने में आकर्षक तो होते ही हैं, साथ ही इन्हें बनाने में सुविधा एवं समय की भी बचत होती है।

(3) प्रोजेक्ट कार्य के लिए छात्र पावर पॉइंट का प्रयोग करते हैं। इससे प्रेजेंटेशन शक्तिशाली व प्रभावी तरीके से किया जा सकता है एवं इसमें भी समय की बचत होती है।

(4) इंटरनेट पर अनेक ऐसी वेबसाइट्स एवं एप्स हैं, जिन पर शिक्षा संबंधी अथाह सामग्री उपलब्ध है। छात्र अध्ययन में उस सामग्री का प्रयोग करके लाभ उठा सकते हैं।

(5) इंटरनेट पर अनेक आभासी पुस्तकालय हैं, जहाँ से छात्र अपनी आवश्यकता की पुस्तक ढूँढकर वहाँ से अधिगम सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

(6) यूट्यूब (youtube) पर लेक्चर्स की अनेक वीडियोज उपलब्ध हैं, जो शिक्षण में तो सहायक हैं ही, इसके अतिरिक्त उन्हें बीच में कहीं पर भी रोका जा सकता है एवं उन्हें सहेज (save) कर रखा जा सकता है ताकि भविष्य में कभी भी देखा जा सके।

एक बार तैयार पाठ को पेन ड्राइव अथवा सीडी के अंतर्गत चिरकाल के लिए संग्रहीत कर छात्र समान रूप से उनका ऑफ लाइन प्रयोग भी कर सकते हैं।

(7) कंप्यूटर अधिगम रुचिकर होता है, जिसके कारण छात्रों में अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न होती है एवं यह उन्हें सरल लगता है।

सीमाएँ–कम्प्यूटर आधारित अधिगम की कुछ सीमाएँ भी हैं जो इस प्रकार हैं–

(1) शिक्षक को स्वयं को कम्प्यूटर का ज्ञान होना आवश्यक है।

(2) शिक्षक को कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण प्रदान करने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है एवं शिक्षण-सामग्री को खोजने में समय भी बहुत लगता है।

(3) चूँकि कम्प्यूटर बहुत महँगा होता है, अतः इन्हें सीमित मात्रा में ही खरीदा जा सकता है।

(4) इनकी संख्या सीमित होने के कारण छात्रों को समूह में अधिगम करवाना पड़ता है, जिसके कारण शिक्षक छात्रों पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाता है।

(5) कम्प्यूटर का सही रख-रखाव भी अत्यंत आवश्यक है। इसके रख-रखाव पर एवं इसके प्रयोग में (बिजली आदि पर) काफी खर्च भी आता है।

सत्रीय कार्य-3/Assignment-III

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें।

Answer the following question in about 1000 words.

प्रश्न 1. मान लीजिए कि आप ऐसे विद्यालय में कार्यरत हैं जिसमें ज्यादातर बच्चे किसी विशिष्ट जनजाति से संबंधित हैं। आप उनकी मातृभाषा नहीं जानते हैं। आप ऐसे बच्चों को सिखाने हेतु किस प्रकार की गतिविधियाँ तैयार करेंगे?

Suppose you are teaching in a tribal dominated school. You do not know the mother tongue of those children. How can you organise activities that children will learn?

उत्तर– जनजाति (tribe) वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था या जो अब भी राज्य के बाहर है। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक पद है। समान भाषा या बोली द्वारा संगठित और कबील अधिकारियों द्वारा प्रशासित यह समूह अन्य कबीलों और जातियों से सामाजिक दूरी

मानता है। कबीले की अपनी परंपराएँ, विश्वास एवं रीतियाँ होती हैं। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति पद का प्रयोग हुआ है और इनके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए हैं। लेकिन फिर भी उनके इस सामाजिक, जातीय, आर्थिक और सांस्कृतिक अंतर के कारण उन्हें अधिगम में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अत: विशिष्ट जनजाति से संबंधित बच्चों को सिखाने हेतु हम निम्न गतिविधियाँ तैयार करेंगे–

(1) समुदाय से सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करना–सर्वप्रथम् हम बच्चे के समुदाय का ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके लिए हम स्वयं को बच्चों के समुदाय का ही हिस्सा समझेंगे एवं उस समुदाय के लोगों से बात करेंगे, उनसे सामाजिक सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा करेंगे तथा उस समुदाय के त्यौहारों में भागीदारी करेंगे।

(2) मातृ-भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयोग करना–यदि हमें किसी ऐसे बच्चे को मातृभाषा से भिन्न किसी अपरिचित भाषा में पढ़ाना है जिसने 5-6 वर्ष तक मातृभाषा का ज्ञान अर्जित किया हो, तो जो भी हम उससे कहेंगे उसे वह नहीं समझ पाएगा। उदाहरण स्वरूप कक्षा 5 की संथाली 'आलाह' समझ सकती है परन्तु 'घर' नहीं, 'मिरोम' परन्तु 'बकरी' नहीं, 'डाका' परन्तु 'चावल' नहीं। यद्यपि वह 5-10 पंक्तियाँ, अपनी मातृभाषा में अपने घर (आलाह) के बारे में बोल सकती है, परंतु अन्य भाषा जो उसके लिए विदेशी है उसमें हो सकता है वह एक भी वाक्य न बोल पाए।

इसीलिए शिक्षण-माध्यम के रूप में उसकी मातृभाषा का उपयोग करेंगे जिससे बच्चे को अवधारणा समझने में तो आसानी होगी ही, इसके साथ-साथ उसमें आत्म-विश्वास भी पैदा होगा।

(3) विद्यालय क्रिया-कलापों में समुदाय को शामिल करना–एक अच्छे शिक्षक की यह विशेषता है कि वह हमेशा सामुदायिक संसाधनों का उपयोग करता है। विद्यालय-प्रबंध तथा कक्षा की गतिविधियों में समुदाय को शामिल करने से बच्चों की निष्पत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। अत: विद्यार्थियों को स्थानीय कला, क्राफ्ट, गीत, संगीत, कहानी और अन्य अच्छी प्रथाएँ आदि सिखाने के लिए हम उसके समुदाय के सदस्यों को संलग्न करेंगे।

(4) अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया में स्थानीय ज्ञान का समावेश–यह संभव नहीं है कि किसी पाठ्यपुस्तक में एक देश या राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय ज्ञान को समाहित कर दिया जाए। इसीलिए एक शिक्षक को स्थानीय ज्ञान के उपयोग से प्रत्येक अवधारणा को पढ़ाना होता है और उसे पाठ्यपुस्तक के ज्ञान से संबंधित करना होता है। उदाहरण के लिए यदि हमें गणित में 'मापन की इकाई' पढ़ानी है तो हमें दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली अमानक इकाइयों से प्रारंभ करेंगे, जैसे कि-सेर, मन, कहना आदि और उसके बाद मापन की मानक इकाइयों, जैसे–कि.ग्रा., कि.मी., लीटर आदि को समझाएंगे ताकि छात्र सहजता से समझ सकें।

(5) कक्षा अधिगम में लोक-सामग्री का उपयोग–प्रत्येक समुदाय की उनकी अपनी लोक-कथाएँ, गीत, पहेलियाँ, कला तथा पेंटिंग्स, आदि होती हैं। यह सामग्री सरल तथा सार्थक अधिगम परिणामों की प्राप्ति को सहज बनाने में ही नहीं, बल्कि अधिगम प्रक्रिया को रोचक बनाने में भी सहायक होती हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान इनका पूरी तरह से उपयोग करेंगे।

FIND YOUR BOOKS .in

(6) शिक्षक द्वारा बच्चों की मातृभाषा सीखना–यद्यपि अध्यापक के लिए यह संभव नहीं कि वह प्रत्येक बच्चे की मातृभाषा सीख सके, फिर भी यथा संभव हम जितनी हो सके, उतनी मातृभाषाएँ सीखेंगे, क्योंकि इससे हमारा काम काफी सरल हो जाएगा। अंत:क्रिया हेतु बच्चों के परिवार तथा समुदाय के लोगों से हम उनकी भाषाओं को भी सीखेंगे।

(7) सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञान वाली पाठ्य-पुस्तकों को अपनाना–पाठ्य-पुस्तकों को अपनाने से तात्पर्य है कि सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वों को पाठ्य-पुस्तक की विषय-वस्तु में शामिल करना तथा आवश्यक होने पर वैकल्पिक विषय वस्तु तैयार करना ताकि बच्चों का अधिगम अनुभव आधारित हो जाए।

(8) सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उपयोग–किसी समुदाय विशेष की अपनी स्वयं की जीवन-शैली, अपने सामाजिक मूल्य, सामाजिक-राजनैतिक संगठन तथा धार्मिक मान्यताएँ होती हैं। उनकी स्वयं की भोजन-संबंधी आदतें, वेश-भूषा, गहने, कृषि तथा उद्योग होते हैं। उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-संबंधी ज्ञान होता है। इस ज्ञान को अधिगम के सहजीकरण हेतु उपयोग में लाने की आवश्यकता है। अत: आगे का ज्ञान प्रदान करने के लिए हम उनके सांस्कृतिक तत्वों को ही आधार बनाएँगे। गुल्लीबाबा डॉट कॉम डी.एल.एड. के लिए सबसे अच्छा स्रोत है।

अथवा

मान लीजिए कि आपकी कक्षा में कुछ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे हैं। ऐसे बच्चों को सिखाने के मददगार के रूप में आप किस प्रकार सहायता करेंगे?

Consider that there are few CWSN children in your classroom, as a teacher how can you take care of such children in the classroom for facilitating their learning?

उत्तर– विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं की पहचान हेतु गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अधिगम अक्षमता के प्रकार व स्तर के अनुसार उपयुक्त शैक्षिक प्रावधान प्रदान किए जाते हैं। फिर भी ऐसे बच्चों की सहायता हेतु कक्षा में कुछ सामान्य तथा व्यावहारिक कदम उठाने की आवश्यकता होती है, जो निम्नलिखित हैं–

(1) इन बच्चों के लिए अधिक अमूर्त अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता है। ये अनुभव उपलब्ध मानक या बनाई गई सामग्री द्वारा प्रदान किए जा सकते हैं। स्थानीय वातावरण से सीधे अनुभव प्राप्त करने हेतु क्षेत्रीय भ्रमण का आयोजन किया जा सकता है।

(2) इन बच्चों को अन्य सामान्य बच्चों की तुलना में अधिक पुनरावृत्ति तथा अभ्यास की आवश्यकता होती है।

(3) अधिगम कार्य को छोटे-छोटे टुकड़ों में प्रस्तुत करने की जरूरत है तथा अधिगम के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर उनके ध्यान को विशेष रूप से आकर्षित करने की आवश्यकता है, क्योंकि इनका ध्यान-समय बहुत कम होता है।

(4) जब ये अधिगम क्रिया में संलग्न हो, उनसे सरल प्रश्न पूछे जा सकते हैं जो उनमें सफलता की भावना का विकास करेंगे।

(5) मौखिक रूप से या सामग्री द्वारा तुरंत पुर्नबलन इन बच्चों के लिए प्रेरणादायक होता है।

https://findyourbooks.in | E-Books | Solved Assignments | Guide Books | Literature and Lot More

(6) सामाजिक स्थितियों में अभ्यास द्वारा इन बच्चों को संप्रेषण कौशलों के प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

(7) इन बच्चों के लिए पाठ्यक्रम का शिक्षण सरल तथा रूचिकर अधिगम अनुभवों द्वारा होना चाहिए।

एक शिक्षक होने के नाते, विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सिखाने के मददगार के रूप में हम इन उपर्युक्त बातों का ध्यान रखेंगे, उदाहरण के लिए–

(1) दृष्टिदोष वाले बच्चों को आँखों की जाँच हेतु अस्पताल भेजना, अभिभावकों को सूचित करना तथा उनकी शिक्षा हेतु उन्हें विशेष सहायता प्रदान करना। कुछ अन्य कार्य निम्नलिखित हैं–

(क) दृष्टिदोष की समस्या वाले बच्चों पर पढ़ने का बोझ कम करने हेतु इन्हें समझने के साथ सुनने का प्रशिक्षण देंगे।

(ख) ऐसे बच्चों को कक्षा में आगे की पंक्ति में बैठाएँगे ताकि वे श्यामपट को सरलता से देख सकें।

(ग) शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर इन्हें देंगे। आंशिक दृष्टि दोष वाले बच्चों के लिए एक पुस्तक स्टेंड की व्यवस्था करेंगे।

(घ) श्यामपट्ट पर बड़े अक्षरों में लिखेंगे तथा उसे जोर से पढ़ेंगे।

(2) जो बच्चे श्रवण की समस्या से ग्रसित हैं उनमें बोलने की समस्या भी विकसित हो जाती है। इसलिए ऐसे बच्चों की पहचान तथा उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उचित कदम उठाएँगे, जो कि निम्न हैं–

(क) कक्षा में बोलते समय एक उपयुक्त स्तर का स्वर रखेंगे। बुदबुदाना तथा बहुत तीव्र गति से नहीं बोलेंगे।

(ख) श्रवण संबंधी समस्या वाले बच्चों को आगे की पंक्ति में बैठाएँगे ताकि जो हम बोलें, वे उसे आसानी से सुन सकें।

(ग) मॉडल प्रदर्शित करते समय या पाठ्य-पुस्तक को पढ़ते समय यह सुनिश्चित करेंगे कि हमारे होठों की गति ऐसे बच्चों को दिखाई दे ताकि वे सुनने की क्रिया को होंठों को पढ़ने द्वारा संपूरक बना सकें।

(घ) इसी प्रकार बोलते हुए श्यामपट पर लिखते समय हम बच्चों की तरफ मुँह रखेंगे न कि श्यामपट की ओर एवं बोलते हुए कक्षा में नहीं घूमेंगे।

(ङ) यदि वाणी दोष किसी अंग की कमी के कारण हो तो चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है। श्रवण दोष के कारण उत्पन्न वाणी दोष को पुनर्बलन ड्रिल तथा अभ्यास के प्रयोग द्वारा बोलने का प्रशिक्षण देने से ठीक किया जा सकता है।

(च) सामान्य शिक्षण की पूर्ति हेतु व्यक्तिगत या समूह में अतिरिक्त दृश्य-सामग्री का उपयोग करेंगे।

(छ) संगी-साथियों को इन बच्चों के साथ अंतर्क्रिया तथा सुनने में एक-दूसरे की सहायता हेतु प्रोत्साहित करेंगे।

FIND YOUR BOOKS .in